

भगत रविदास – सबद ३५

खटु करम कुल संजुगतु है हरि भगति हिरदै नाहि ॥

रागु केदारा, भगत रविदास, गुरु ग्रंथ साहिब, ११२४

खटु करम कुल संजुगतु है हरि भगति हिरदै नाहि ॥

चरनारबिंद न कथा भावै सुपच तुलि समानि ॥ १ ॥

रे चित चेति चेत अचेत ॥

काहे न बालमीकहि देख ॥

किसु जाति ते किह पदहि अमरिओ राम भगति बिसेख ॥ १ ॥ रहाउ ॥

सुआन सलु अजातु सभ ते कूरस लावै हेतु ॥

लोगु बपुरा किआ सराहै तीनि लोक प्रवेस ॥ २ ॥

अजामलु पिंगुला लुभतु कुँचरु गए हरि कै पासि ॥

ऐसे दुरमति निसतरे तू किउ न तरहि रविदास ॥ ३ ॥ १ ॥

सार: बाहरी अभिव्यक्ति और आंतरिक सोच के बीच का अंतर यह दिखाता है कि कैसे ऊपरी दिखावा आसानी से वास्तविक भावनाओं की जगह ले सकता है। शब्द, हाव-भाव और रीति-रिवाज सच्चे लग सकते हैं, फिर भी भीतर की स्थिति अपरिवर्तित रहती है। यह सामंजस्य की कमी एक नाज़ुक भ्रम रचती है। जब कामों में भीतरी स्पष्टता की कमी होती है तब वह वास्तविक भावनाओं के बजाय सिर्फ़ दिखावा बन जाते हैं। सच्ची अखंडता तभी जन्म लेती है जब भीतर की शांति चुपचाप हमारे बाहरी कर्मों को दिशा देती है। इस सामंजस्य के बिना, अच्छे इरादों वाले कर्म भी खाली लग सकते हैं। इसके विपरीत, जब सामंजस्य होता है तब सादगी अर्थ से भर जाती है और निरंतरता बिना प्रयास लग जाती है।

खटु करम कुल संजुगतु है हरि भगति हिरदै नाहि ॥

उच्च कुल से जुड़ी, भारतीय पूजा की छह रस्मों का पालन करना, लेकिन विवेक सर्वव्यापी चेतना के प्रति भक्ति से रहित है। यह दिखाता है कि रस्में परंपरा को बनाए रख सकती हैं और वर्ग दर्जा भी दे सकता है लेकिन मन में भक्ति भाव के बिना सब खोखले रिवाज हैं।

चरनारबिंद न कथा भावै सुपच तुलि समानि ॥ १॥

यदि एकत्व के प्रति विनम्र भक्ति न हो और आध्यात्मिक विवेक से अरुचि हो तब यही वास्तविक तौर पर बहिष्कृत होना है। यह निम्न होने को जाति के रूप में नहीं बल्कि चेतना के साथ सामंजस्य की कमी के रूप में परिभाषित करता है। (१)

रे चित चेति चेत अचेत ॥

हे विवेक, जागो, अचेत रहने के बजाय जागरूक रहो। यह स्वयं को अपने विचारों और कर्मों के प्रति सचेत रहने का आदेश है।

काहे न बालमीकहि देख ॥

तुम वाल्मीकि का उदाहरण क्यों नहीं देखते? एक निम्न जाति के चोर से एक प्रबुद्ध ऋषि में यह परिवर्तन हमारी उन बुराइयों को दूर करने की जन्मजात अंतर्निहित क्षमता को दर्शाता है जिन्हें हम अपना लेते हैं।

किसु जाति ते किह पदहि अमरिओ राम भगति बिसेख ॥ १॥ रहाउ ॥

वह किस जाति से थे और सर्वव्यापी एकता के प्रति अपनी उत्कृष्ट भक्ति से उन्होंने कौन सा उच्च स्थान प्राप्त किया। यह स्मरण कराता है कि हमारी उत्पत्ति हमारी क्षमता को परिभाषित नहीं करती है। (१)(विराम)

सुआन सलु अजातु सभ ते कूरस लावै हेतु ॥

जिन्हें अछूत माना जाता था और सभी ने ठुकरा दिया था, उन्हें भी महान आत्माओं ने प्यार से अपनाया। यह एक अहंकारी, अवास्तविक मानसिकता को उजागर करता है जो भेदभाव करती है जबकि एक विकसित, जाग्रत मानसिकता सबको गले लगाती है।

लोगु बपुरा किआ सराहै तीनि लोक प्रवेस ॥२॥

भेद्य लोग उस सर्वव्यापी चेतना की क्या प्रशंसा कर सकते हैं जो अस्तित्व के तीनों लोकों में व्याप्त है? यह विचार जोर देता है कि अगर हम सृष्टि की संपूर्णता को समझने में असफल रहते हैं तब हर स्वीकृति अपना मूल्य खो देती है। (२)

अजामलु पिंगुला लुभतु कुँचरु गए हरि कै पासि ॥

अजमल (दुराचारी), पिंगुला (तवायफ़) और लालची हाथी (अशांत मन) सभी सर्वव्यापी स्रोत के सार तक पहुँचे। नैतिक रूप से अयोग्य माने जाने वाले इन लोगों के उदाहरण जिन्होंने जागरूकता प्राप्त की, यह दर्शाते हैं कि गलतियाँ विकास के रास्ते में स्थायी बाधाएँ नहीं हैं।

ऐसे दुरमति निसतरे तू किउ न तरहि रविदास ॥३॥१॥

अगर ऐसे भ्रमित मन पार जा सकते हैं तब तुम क्यों नहीं पार जाओगे, हे रविदास? यह विचार आत्मविश्वास जगाता है कि शुभ नीयत से शुभ परिणाम संभव हैं। (३)(१)

तत्त्व: भगत रविदास कहते हैं कि कठोर सामाजिक और धार्मिक सीमाएँ जिन्हें अक्सर ज्ञान प्राप्ति के प्रकाश का रास्ता माना जाता है, सिर्फ़ भ्रम हैं। वह वाल्मीकि की कहानी का उदाहरण देते हैं जो एक भेद्य चोर से एक ज्ञानी ऋषि बने और दिखाते हैं कि हममें मानसिक सोच से ऊपर उठने, नकारात्मक सोच को छोड़ने और दूसरेपन' के भय को दूर करने की जन्मजात क्षमता है। यह सोच न सिर्फ़ प्रेरणादायक है बल्कि यह हमें सशक्त बनाती है। जब हम सकारात्मक इरादों पर ध्यान देते हैं तब हम अपने जीवन में सकारात्मक नतीजों की उम्मीद कर सकते हैं।

सबद व्याख्या विनइंदर कौर और अमरदीप सिंह

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com